प्रस्तावना

यह पुस्तक व्यावहारिक है, दार्शनिक नहीं; यह एक व्यावहारिक मार्गदर्शिका है, सिद्धांतो का कोई शोध प्रबंध नहीं।

यह उन सभी लोगों के लिए है जिनकी सबसे जबरदस्त आवश्यकता पैसा है, जो पहले पैसा पाना चाहते हैं और उसके फ़लसफ़े में जाना बाद में।

यह पुस्तक उन लोगों के लिए है जिन्हें आध्यात्मिक व पराभौतिक विद्या के अध्ययन में गहरे उतरने का अभी तक न तो समय मिला है, न साधन मिला है, और न ही अवसर मिला है; लेकिन जो परिणाम चाहते हैं, जो फल चाहते हैं और अपने कार्यों का आधार विज्ञान के निष्कर्षों को बनाना चाहते हैं - वह भी उन तमाम प्रक्रियायों में से गुज़रे बिना ही कि जिनसे गुज़र कर इन निष्कर्षों पर पहुंचा गया है।

आशा है कि पाठक इन मौलिक वक्तव्यों पर उसी प्रकार विश्वास करेंगे जिस प्रकार कि विद्युत क्रियाओं के बारे में वे मारकोनी या एडीसन द्वारा घोषित किए गए वक्तव्यों पर करते हैं। उनमें वे ऐसे विश्वास करते हैं जैसे कि निर्भय व निःसंकोच रूप से उनके अनुसार चल कर वे उन्हें सही सिद्ध कर देंगे।

जो कोई भी इस पुस्तक में दिए गए वक्तव्यों के अनुसार चलेगा, वह निश्चित रूप से धनवान बनेगा क्योंकि यहां बताया गया विज्ञान एक यथार्थ विज्ञान है जिसका विफल होना असंभव है।

फिर भी, जो लोग दार्शनिक सिद्धांतों में उतर कर छानबीन करना ही चाहते हैं ताकि अपने विश्वास का वे कोई तार्किक आधार सुनिश्चित कर सकें, उनके लिए मैं कुछ ऐसे लोगों के वक्तव्य प्रस्तुत करूंगा जो कि इस विषय में ऑथोरिटी कहे जाते हैं।

विश्व के एकत्ववाद का, या अद्वैतवाद का सिद्धांत, अर्थात वेदांत का सिद्धांत - कि एक में सब है और सब एक में है, कि एक ही तत्व संसार के विभिन्न रूपों में

प्रकट होता प्रतीत होता है - मूलतः हिंदू दर्शन से आया है और दो सौ वर्षों से यह पश्चिम में एक विचारधारा का रूप लेता जा रहा है।

यह सिद्धांत पूरब के सभी दर्शनों का आधार रहा है और पश्चिम के दार्शनिक देकार्त, स्पिनोज़ा, लिब्निट्ज़, शोपेनहावर, हीगल और एमर्सन के दर्शन का भी।

जो पाठक इसके आधार तक गहरे में पहुंचना चाहते हैं उन्हें मेरी सलाह है कि वे हीगल और एमर्सन को स्वयं पढ़ें।

इस पुस्तक को लिखने में मैंने सादगी, स्पष्टता व सरलता का विशेष ध्यान रखा है ताकि हर कोई समझ सके।

यहां बताई गई कार्ययोजना दर्शनशास्त्र के निष्कर्षों पर बनाई गई है, यह पूरी तरह से परीक्षित है, परखी हुई है, और व्यावहारिकता की सर्वोच्च कसौटी पर खरी उतरी है। यह काम करती है, यह कारगर है।

अगर आप यह जानना चाहते हैं कि ये निष्कर्ष कैसे निकाले गए हैं तो आप उपर्युक्त लेखकों को पढ़ें, लेकिन अगर आप उनके दर्शन के निष्कर्षों को सीधे अपने व्यवहार में प्रयोग करना चाहते हैं तो इस पुस्तक को पढ़ें, और ठीक ही वैसा करें जैसा करने के लिए यह पुस्तक कहती है।

वॉलेस डी वैटेल्ज़

अध्याय 1

धनवान होने का अधिकार

गरीबी की तारीफ़ में कितने ही गीत गए हों, लेकिन यह निर्विवाद सत्य है कि धनवान हुए बिना वास्तव में एक परिपूर्ण और सफल जीवन नहीं जिया जा सकता।

कोई भी व्यक्ति अपनी प्रतिभा और आत्मविकास की यथासंभव उच्चतम स्थिति तक तब तक नहीं पहुंच पाता है जब तक कि उसके पास धन प्रचुर मात्रा में न हो क्योंकि अपने व्यक्तित्व को पूरी तरह प्रकट होने देने के लिए और अपनी प्रतिभा को पूरी तरह विकसित होने देने के लिए उसे बहुत सारी चीज़ों की आवश्यकता पड़ती है, और उन चीज़ों को वह तब तक नहीं हासिल कर सकता जब तक कि उन्हें खरीदने के लिए उसके पास पर्याप्त धन न हो।

व्यक्ति इन चीज़ों का प्रयोग करते हुए ही अपना मानसिक, आत्मिक, व शारीरिक विकास करता है लेकिन समाज की व्यवस्था कुछ ऐसी है कि इन चीज़ों का स्वामी होने के लिए उसके पास धन का होना आवश्यक है। इसलिए, किसी भी प्रगति व उन्नति के लिए, व्यक्ति को धनवान होने का विज्ञान आना ही चाहिए।

हम में से हर किसी के जीवन का लक्ष्य होता है विकास, विस्तार, और उत्थान, और हर किसी का यह जन्मसिद्ध अधिकार है कि वह हर उस विकास, विस्तार और उत्थान को प्राप्त करे जिसे प्राप्त करने की उसमें योग्यता है, क्षमता है।

व्यक्ति के जीने के अधिकार का अर्थ यह है कि उसे उन तमाम चीज़ों को हासिल करने का सहज और अबाध अधिकार प्राप्त है जो कि उसके संपूर्ण

मानसिक, आध्यात्मिक और शारीरिक विकास के लिए आवश्यक हैं, या दूसरे शब्दों में कहें तो उसे धनवान होने का अधिकार है।

इस पुस्तक में धन का मैं कोई आलंकारिक बखान करने नहीं जा रहा हूं, क्योंकि सचमुच धनवान होने का अर्थ यह नहीं है कि थोड़े से ही तुष्ट व तृप्त हो जाया जाए।

अगर कोई व्यक्ति अधिक को भोगने और आनंद उठाने के योग्य व सक्षम है तो उसे थोड़े में तुष्ट व तृप्त नहीं हो जाना चाहिए।

प्रकृति का प्रयोजन ही है जीवन का विस्तार होना, वृद्धि व उन्नति होना; और हर किसी के पास वह सब होना जो जीवन की शक्ति, चारुता, सुंदरता, और समृद्धि के लिए आवश्यक हो। थोड़े में संतुष्ट हो रहना पाप है।

जो व्यक्ति जैसा जीवन जीना चाहता है और जिसके लिए वह सक्षम है, यदि वह सब उसके पास है तो वह धनवान है; लेकिन जिसके पास पर्याप्त धन नहीं है वह वह सब नहीं पा सकता जो कि वह चाहता है।

रहन-सहन अब बहुत आगे बढ़ गया है और इतना जटिल हो गया है कि साधारण लोगों को अपने जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए भी काफ़ी पैसा चाहिए होता है।

हर व्यक्ति स्वाभाविक रूप से वह सब बनना चाहता है जो बनने की क्षमता वह रखता है। अपनी सहज संभावनाओं को पहचानने की इच्छा मानव स्वभाव में जन्मजात होती है। जो हम हो सकते हैं वह होने की इच्छा को हम दबा नहीं सकते।

जो आप होना चाहते हैं वह हो जाना ही जीवन की सफलता है। जीवन में जो आप होना चाहते हैं वह केवल चीज़ों का इस्तेमाल करके ही हो सकते हैं, और उन चीज़ों का इस्तेमाल आप अबाध रूप से तभी कर सकते हैं जब आप इतने धनवान हों कि उन चीज़ों को खरीद सकें।

इसलिए, धनवान बनने के विज्ञान को समझना किसी भी ज्ञान की अपेक्षा अधिक आवश्यक है, बल्कि कहना होगा कि सबसे अधिक आवश्यक है।

धनवान बनने की चाहना करने में कुछ भी ग़लत नहीं है।

धन-दौलत की चाहना करना दरअसल अधिक धनवान होने की, संपन्न होने की, अधिक भरा-पूरा होने की, और जीवन में अधिक विपुलता होने की इच्छा करना है, और ऐसी इच्छा का होना प्रशंसनीय है।

जो व्यक्ति जीवन में अधिक प्रचुरता की इच्छा न करता हो, वह प्रकृति-विरुद्ध है, अस्वाभाविक है, उसमें कुछ गड़बड़ है। और, इसी प्रकार, जो व्यक्ति अपनी

इच्छित चीज़ों को खरीदने के लिए पर्याप्त पैसा पाने की इच्छा ही न करता हो, वह भी अप्राकृतिक है, अस्वाभाविक है, उसमें कुछ गड़बड़ है।

ऐसे तीन हेतु हैं जिनके लिए हम जीते हैं - हम तन के लिए जीते हैं, हम मन के लिए जीते हैं, और हम आत्मा के लिए जीते हैं।

इन तीनों में कोई सा एक किसी दूसरे से अधिक श्रेष्ठ या अधिक पवित्र नहीं है। और, इन तीनों में से - यानी तन, मन और आत्मा में से - कोई सा भी एक तब पूरी तरह से नहीं जी सकता जब बाकी दोनों में से एक को भी जीवन में और अभिव्यक्ति में कम कर दिया गया हो।

केवल आत्मा के लिए जीना और तन व मन को नकार देना, वंचित कर देना, न तो उचित है और न ही महानता है। और, तन व आत्मा को नकार कर केवल बुद्धि के लिए जीना भी अनुचित है।

केवल तन के जीने और मन व आत्मा को नकार दिए जाने के घिनौने परिणामों को हम सभी जानते हैं। हम साफ़ तौर पर देख सकते हैं कि सार्थक जीवन का अर्थ है तन, मन व आत्मा द्वारा की जा सकने वाली सभी अभिव्यक्तियों का प्रकट होना।

कोई व्यक्ति कुछ भी कहे लेकिन वह तब तक सचमुच सुखी व संतुष्ट नहीं हो सकता जब तक कि उसका तन अपने हर कार्यकलाप में पूरी तरह से न जी रहा हो, और जब तक कि उसके मन की और आत्मा की भी अवस्था ऐसी ही न हो।

जहां कहीं भी कोई संभावित कार्य अव्यक्त रूप में रहता है, या कोई कार्य ऐसा रहता है जिसे किया नहीं गया हो, तो वहां इच्छा अतृप्त रूप में बनी रहती है।

इच्छा वह संभावना होती है जो कि अभिव्यक्त होना चाहती है, या वह कोई ऐसा कार्य होती है जो किया जाना है।

मानव अपने तन में तब तक पूरी तरह नहीं जी सकता जब तक कि उसके पास भोजन न हो, आवश्यकतानुसार वस्त्र न हों, और सिर छुपाने की कोई सुरक्षित जगह न हो, और उसे परिश्रम की अति न करनी पड़ती हो। विश्राम और मनोरंजन भी उसके शरीरिक जीवन के लिए आवश्यक होते हैं।

वह अपने मन से तब तक पूरी तरह नहीं जी सकता जब तक कि उसके पास पुस्तकें न हों और उनको पढ़ने के लिए उसके पास समय न हो, यात्रा करने व अवलोकन करने के लिए उसके पास अवसर न हों, या उसके पास कोई बुद्धिमान संगी-साथी न हो।

मन में पूरी तरह जीने के लिए उसे बौद्धिक मनोरंजन की आवश्यकता होती है, और उसे स्वयं को ऐसी कलात्मक व सुंदर चीज़ों के बीच रहने की भी आवश्यकता

होती है जिन्हें वह प्रयोग कर सके, जिनकी प्रशंसा कर सके, जिनका आनंद ले सके।

आत्मा में पूरी तरह जीने के लिए उसमें प्रेम का होना अनिवार्य है, लेकिन ग़रीबी द्वारा प्रेम की अभिव्यक्ति को दरकिनार कर दिया जाता है।

व्यक्ति को सबसे अधिक सुख और प्रसन्नता तब होती है जब वह उन लोगों को कुछ देता है जिन्हें वह प्रेम करता है, क्योंकि देने में ही प्रेम अपनी सबसे अधिक स्वाभाविक व सहज अभिव्यक्ति अनुभव किया करता है।

जिस के पास देने के लिए कुछ नहीं है ऐसा व्यक्ति पति के रूप में, पिता के रूप में, एक नागरिक के रूप में, और एक मनुष्य के रूप में भी, कभी पूरा नहीं कहा जा सकता।

भौतिक चीज़ों का उपयोग व उपभोग करने में ही व्यक्ति अपने तन का पूरा जीवन जीता है, मन को विकसित करता है, और आत्मा को प्रकाशित करता है।

इसलिए, उसके लिए यह परम आवश्यक है कि वह धनवान हो।

यह पूरी तरह से उचित है कि आप धनवान होने की इच्छा करें, अगर आप सामान्य व्यक्ति हैं तो ऐसी इच्छा किए बिना आप रह ही नहीं सकते।

यह पूरी तरह से उचित है कि आप अपनी पूरी तवज्जो धनवान होने के विज्ञान पर लगा दें क्योंकि जितनी भी शिक्षाएं हैं, जितने भी सबक हैं, उनमें यह सबसे श्रेष्ठ व सबसे अधिक आवश्यक सबक है।

अगर आप इस शिक्षा को, इस सबक को, उपेक्षित कर देंगे तो आप अपने प्रति, ईश्वर के प्रति, और मानवता के प्रति अपने कर्तव्य को उपेक्षित कर देंगे क्योंकि ईश्वर की और मानवता की सेवा आप उतनी ही बड़ी कर सकते हैं जितना बड़ा आप स्वयं को बना सकते हैं।

अध्याय 2

धनवान होने का विज्ञान उपलब्ध है

धनवान होने का एक विज्ञान है और यह उपलब्ध भी है, और यह ऐसा ही परिपूर्ण विज्ञान है जैसे कि अंकगणित व बीजगणित हैं।

धन अर्जित करने के कुछ नियम-सिद्धांत होते हैं। जब कोई व्यक्ति इन नियम-सिद्धांतों को सीख लेता है और उनका पालन करता है तब दो और दो चार जैसी सुनिश्चितता से वह धन अर्जित कर लेता है, वह धनवान हो जाता है।

धन-संपदा का स्वामित्व एक 'विशिष्ट आचरण' के अनुसार जीवन जीने से प्राप्त होता है। जो लोग एक 'विशिष्ट आचरण' के अनुसार जीवन जीते हैं - इस प्रयोजन से या इत्तफ़ाक से - वे धनवान हो जाते हैं। लेकिन, जो लोग इस 'विशिष्ट आचरण' से जीवन नही जीते हैं, वे चाहे जितना कठोर परिश्रम कर लें या वे चाहे जितने सुयोग्य हों, लेकिन वे ग़रीब ही रहेंगे।

प्रकृति का एक नियम है कि जो बोओगे वही पाओगे - हमेशा। और इसलिए, जो व्यक्ति एक 'विशिष्ट आचरण' के अनुसार जीवन जीना सीख जाता है, वह निःसंदेह धनवान हो जाता है।

निम्नलिखित तथ्य यह बताते हैं कि ऊपर लिखा वक्तव्य कितना सत्य हैः

धनवान होना परिवेश पर, वातावरण पर, आधारित नहीं होता। अगर होता तो धनवानों के पड़ोसी भी धनवान हो गए होते, किसी शहर के सारे लोग धनी हो गए होते, जब कि उससे दूर शहर के सभी लोग ग़रीब ही रहते, या किसी एक राज्य के सारे ही लोग पैसों में खेल रहे होते और दूसरे राज्य के लोग पैसे को तरस रहे होते।

लेकिन हम देखते हैं कि धनवान और निर्धन, अमीर और ग़रीब हर कहीं आस-पास रह रहे हैं - एक ही परिवेश में और एक जैसा ही काम-धंधा करते हुए।

जब दो व्यक्ति एक ही बस्ती में रह रहे हों, और एक ही तरह का व्यवसाय कर रहें हों, लेकिन एक तो धनवान होता चला जाए और दूसरा ग़रीब ही बना रहे, तो यह बताता है कि धनवान होना मूलतः परिवेश का मामला नहीं है।

हां, यह हो सकता है कि कोई परिवेश अधिक अनुकूल हो, अधिक लाभप्रद हो, लेकिन जब दो व्यक्ति एक ही परिवेश में एक ही व्यवसाय कर रहे हों लेकिन एक तो धनवान हो जाए और दूसरा न हो पाए, तो यह बताता है कि धनवान होना एक 'विशिष्ट आचरण' के अनुसार जीवन जीने का ही परिणाम होता है एक जैसे परिवेश का नहीं।

साथ ही, ऐसा भी नहीं है कि इस 'विशिष्ट आचरण' के अनुसार जीने के लिए आपको किसी विशेष प्रतिभा की आवश्यकता होती है, क्योंकि ऐसे बहुत से लोग हैं जिनमें प्रतिभा तो खूब है लेकिन वे ग़रीब हैं, जब कि थोड़ी सी प्रतिभा वाले भी धनवान हो गए हैं।

जो लोग धनवान हुए हैं उनका अध्ययन करने पर हम पाते हैं कि एक तरह से वे लोग औसत दर्जे के ही हैं, और औरों के मुकाबले उनमें कोई विलक्षण प्रतिभा भी नहीं होती है। इससे यह बात तो स्पष्ट है कि वे इस कारण से धनवान नहीं हुए हैं कि उनमें कोई ऐसी प्रतिभा व योग्यता है जो कि औरों में नहीं है, बल्कि वे इसलिए धनवान हुए हैं क्योंकि उन्होंने एक 'विशिष्ट आचरण' के अनुसार जीवन जिया है।

धनवान होना कोई बचत करने का या ''मितव्ययता'' का फल नहीं होता। बहुत से कंजूस लोग ग़रीब ही हैं, जब कि दिल खोल कर खर्च करने वाले अक्सर धनवान हो जाते हैं।

न ही, कोई धनवान इसलिए हो जाता है क्योंकि वह ऐसे काम करता है जिसे दूसरे करने में विफल रहते हैं, क्योंकि एक जैसा ही व्यवसाय करने वाले लोग लगभग एक जैसा ही काम कर रहे होते हैं, लेकिन उनमें से एक तो धनवान हो जाता है जब कि दूसरा ग़रीब ही रह जाता है, और कभी-कभी तो दिवालिया भी हो जाता है।

इन सब बातों को देखते हुए अवश्य ही हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि धनवान होना जीवन को एक 'विशिष्ट आचरण' के अनुसार जीने का ही परिणाम होता है।

धनवान होना अगर जीवन को एक 'विशिष्ट आचरण' के अनुसार जीने का परिणाम है, और अगर यह 'जैसा बोया वैसा पाया' का परिणाम है, तो तदनुसार

जीवन जी कर कोई भी धनवान हो सकता है और यह सारा विषय विशुद्ध विज्ञान के दायरे में आ सकता है।

यहां यह प्रश्न पूछा जा सकता है कि यह 'विशिष्ट आचरण' इतना कठिन तो नहीं है कि केवल कुछ ही लोग इस पर चल सकते हों?

नहीं, ऐसा नहीं है, क्योंकि हमने स्वाभाविक तथा प्रकृति प्रदत्त योग्यताओं के बारे में ऐसा देखा भी है।

अगर प्रतिभाशाली लोग धनवान हो जाते हैं तो प्रतिभाहीन भी धनवान हो जाते हैं। अगर कुशाग्र बुद्धि वाले धनवान हो जाते हैं तो कुंद बुद्धि वाले भी धनवान हो जाते हैं। अगर हृष्ट-पुष्ट, स्वस्थ व निरोग लोग धनवान हो जाते हैं तो दुर्बल व रोगी लोग भी धनवान हो जाते हैं।

व्यक्ति में सोचने-समझने की योग्यता का होना कुछ हद तक तो आवश्यक है, अनिवार्य है, लेकिन जहां तक उसमें प्रकृति प्रदत्त यानी स्वाभाविक योग्यता होने की बात है, तो हर वह व्यक्ति जो इन शब्दों को पढ़ने व समझने की योग्यता रखता है वह निश्चिय ही धनवान हो सकता है।

और, यह तो हम देख ही चुके हैं कि धनवान होना या न होना परिवेश पर निर्भर नहीं होता। स्थान का, यानी इस बात का कि व्यक्ति कहां पर है या उसका व्यवसाय कहां पर है, यह किसी हद तक ही महत्व रखता है, जैसे ऐसा नहीं हो सकता कि कोई सहारा के रेगिस्तान में चला जाए और वहां व्यापार-व्यवसाय खोल कर सफल होना चाहे।

धनवान होने के लिए लोगों का संग-साथ होना, उनके साथ संव्यवहार होना आवश्यक होता है। और, लोगों का संग-साथ जितना अधिक होगा, उनके साथ संव्यवहार जितना अच्छा होगा, और वह संव्यवहार भी हमारे मनोनुकूल जितना अधिक होगा, उतना ही हमारा व्यापार-व्यवसाय अच्छा होगा।

लेकिन परिवेश या वातावरण ही सब कुछ नहीं होता। अगर होता तो आपके शहर में कोई एक अगर धनवान हो सकता है तो फिर आप भी हो सकते हैं, आपके राज्य में अगर कोई एक धनवान हो सकता है तो फिर आप भी हो सकते हैं।

और, धनवान होना किसी व्यापार विशेष या व्यवसाय विशेष को चुनने वाला मामला नहीं है।

कुछ लोग किसी भी व्यापार में, किसी व्यवसाय में, या किसी भी काम-धंधे में, धनवान हो जाते हैं, जब कि उसी व्यापार, व्यवसाय और काम-धंधे को करने वाला उनका पड़ोसी ग़रीब ही रह जाता है।

यह बात सच है कि आप उस काम को बेहतरीन ढंग से करते हैं जिसे करना आप पसंद करते हैं और जो आपके मनोनुकूल होता है, और अगर आपने कोई प्रतिभा विकसित कर ली है तो फिर उस प्रतिभा के अनुकूल काम को आप बेहतरीन ढंग से करते हैं।

साथ ही, उस काम-धंधे को आप तब बहुत बढ़िया करते हैं जो आपके क्षेत्र की बसावट के अनुकूल होता है। जैसे, आइसक्रीम बनाने व बेचने का काम किसी गरम जलवायु वाले क्षेत्र में अच्छा चलेगा, न कि ग्रीनलैंड में। इसी प्रकार, सालमन मछली पकड़ने का धंधा नॉर्थवैस्ट में बढ़िया चलेगा, न कि फ्लोरिडा में, जहां कि सालमन होती ही नहीं।

लेकिन, इन तमाम सामान्य सीमाओं व शर्तों के बावजूद, धनवान होना किसी विशेष व्यापार, व्यवसाय या कारोबार पर निर्भर नहीं होता, बल्कि वह निर्भर होता है आपके द्वारा एक 'विशिष्ट आचरण' के अनुसार जीना जीने पर।

इस समय आप अगर कोई व्यापार-व्यवसाय कर रहे हैं और आपकी बस्ती में, आपके शहर में कोई अन्य व्यक्ति भी वही व्यापार-व्यवसाय करते हुए धनवान हो रहा है लेकिन आप नहीं हो रहे हैं, तो ऐसा इसलिए हो रहा है क्योंकि आप जीवन का उस प्रकार, उस 'आचरण' के अनुसार नहीं जी रहे हैं जैसे कि वह जी रहा है।

पूंजी की कमी के कारण कभी कोई धनवान बनने से वंचित नहीं रहता।

यह सही है कि जब आप को पूंजी मिल जाती है तो व्यवसाय में बढ़त आसान हो जाती है, तेज़ हो जाती है, लेकिन जिसके पास पूंजी है वह तो पहले से ही धनवान है और इसलिए उसे धनवान होने की बात सोचने की आवश्यकता भी महसूस नहीं होती है। आप चाहे कितने भी ग़रीब हों, अगर आप एक 'विशिष्ट आचरण' के अनुसार जीना आरंभ कर देते हैं तो आप धनवान होना आरंभ कर देते हैं और आपके पास पूंजी का आना भी आरंभ हो जाता है।

पूंजी आना शुरू होना धनवान बनने का एक हिस्सा होता है, और यह उस परिणाम का भी हिस्सा होता है जो एक 'विशिष्ट आचरण' के अनुसार कार्य करने पर निरपवाद रूप से प्राप्त होता है।

भले ही आप इस महाद्वीप के सबसे ग़रीब आदमी हों, चाहे आप क़र्ज़ में आकंठ डूबे हुए हों, चाहे आपका न कोई मित्र हो, न कोई प्रभाव हो, और न ही कोई आपके पास कोई साधन, कोई उपाय हो, लेकिन अगर आप इस आचरण के अनुसार जीना आरंभ कर देते हैं तो निःसंदेह आप धनवान होना आरंभ कर देंगे, क्योंकि जैसा बीज बोया जाता है व्यक्ति वैसा ही फल पाता है।

अगर आपके पास पूंजी नहीं है तो वह आपको मिल सकती है, अगर आप ग़लत व्यवसाय में हैं तो आप सही व्यवसाय में जा सकते हैं, अगर आप ग़लत बस्ती या ग़लत शहर या ग़लत जगह पर हैं तो आप सही जगह पर जा सकते हैं, लेकिन सफलता देने वाले 'विशिष्ट आचरण' के अनुसार कार्य करके आप वर्तमान व्यवसाय और वर्तमान स्थान पर रहते हुए ही वह सब पाना शुरू कर सकते हैं।

अध्याय 3

क्या सुअवसरों पर किसी का एकाधिकार होता है?

कोई भी इस कारण से ग़रीब नही रह सकता कि सुअवसर उससे छीन लिए गए हों, कि औरों ने सारी धन-दौलत पर एकाधिकार जमा लिया हो और उसके चारों तरफ़ चारदीवारी खड़ी कर दी हो।

किन्हीं विशेष दिशाओं में आपके लिए कभी किसी व्यवसाय के रास्ते बंद हो सकते हैं लेकिन बाकी चैनल तो आपके लिए खुले हुए ही हैं।

शायद यह आपके लिए बड़ा ही कठिन हो कि आप किसी बड़ी रेल प्रणाली का अधिकार व नियंत्रण पा सकें, क्योंकि उस क्षेत्र पर लोगों ने अच्छा-ख़ासा एकाधिकार जमा रखा है। लेकिन, इलैक्ट्रिक रेलवे का व्यवसाय अभी भी आरंभिक अवस्था में है और उसमें व्यवसाय की काफ़ी संभावनाएं हैं, और कुछ ही साल बाद जब हवाई जहाज द्वारा किया जाने वाला ट्रैफिक और ट्रांस्पोर्ट एक बड़े उद्योग के रूप में उभर कर आ जायेगा, तब इसकी विभिन्न शाखाओं में लोगों को रोज़गार के सैंकड़ों, हज़ारों, या शायद लाखों अवसर उपलब्ध होंगे।

तो, रेलवे की दुनिया में अवसर तलाशने के लिए जे.जे.हिल के साथ प्रतिस्पर्धा करने के बजाय आप अपना ध्यान हवाई ट्रांस्पोरटेशन की तरफ़ क्यों नहीं लगाते?

अगर आप किसी स्टील उद्योग में एक वर्कमैन रूप में नौकरी करते हैं तो इस बात की संभावना न के बराबर है कि आप उस प्लांट के मालिक बन जाएं जिसमें कि आप नौकरी करते हैं। लेकिन, यह भी सच है कि अगर आप एक

'विशेष आचरण' के अनुसार जीना आरंभ कर दें तो आप उस स्टील उद्योग की नौकरी छोड़ सकते हैं और दस ले लेकर चालीस एकड़ तक का फ़ार्म ख़रीद सकते हैं और खाद्य पदार्थों के उत्पादक के रूप में अपना व्यवसाय खड़ा कर सकते हैं।

आज के समय में, उन लोगों के लिए बहुत बड़ा सुअवसर उपलब्ध है जो किसी छोटे भूखंड पर रह सकते हैं और उस पर जबरदस्त ढंग से खेती कर सकते हैं। ऐसे लोग निश्चित रूप से धनवान होंगे।

शायद आप कहें कि ज़मीन पाना आपके लिए असंभव है, लेकिन मैं यह सिद्ध करने जा रहा हूं कि यह असंभव नहीं है और आपको कोई फ़ार्म निश्चित रूप से मिल जायेगा, बशर्ते कि आप एक 'विशेष आचरण' के जीना आरंभ करें।

समय-समय पर चलने वाली अवसरों की हवाएं संसार की आवश्कताओं के अनुसार विभिन्न दिशाओं की ओर चला करती हैं, ये विकास की उस विशेष अवस्था के अनुसार भी चला करती है जहां पर समाज उस समय पहुंच गया होता है।

वर्तमान समय में अमेरिका में ये हवा कृषि और उससे जुड़े उद्योगों और पेशों की ओर चल रही है।

आज अवसरों के द्वार कृषि से जुड़े उद्योगों में कामगारों के लिए खुल रहे हैं।

सुअवसरों के द्वार फैक्ट्रियों को सामान आपूर्ति करने वाले व्यापारियों के बजाय उन व्यापारियों के लिए अधिक खुल रहे हैं जो किसानों को सामान की आपूर्ति करते हैं, और नौकरी करने वाले लोगों के लिए काम करने वाले पेशेवर लोगों के बजाय उन पेशेवर लोगों के लिए अधिक खुल रहे हैं जो किसानों के लिए सेवाएं उपलब्ध कराते हैं।

समय की लहरों पर सवार होकर आगे बढ़ने वालों के लिए तो अवसर ही अवसर उपलब्ध रहते हैं, न कि उन लोगों के लिए जो लहरों के विरुद्ध तैरने की कोशिश करते हैं।

इसलिए, फैक्ट्रियों में काम करने वाला चाहे कोई व्यक्ति हो या कोई समूह हो, वह अवसरों से वंचित नहीं रहता है।

कामगारों को उनके मालिकों द्वारा 'दबा कर' नहीं रखा जा रहा है, न ही उन्हें उद्योगों व पूंजीपतियों द्वारा अपने अधीन रखा जा रहा है।

एक वर्ग के रूप वे वही रहते हैं जो वे हैं और वे वहीं रहते हैं जहां वे हैं, क्योंकि वे एक 'विशेष आचरण' के अनुसार जीवन नहीं जी रहे हैं।

अगर अमेरिका के कामगारों ने ऐसा करना चुना होता तो वे अपने बेल्जियम व अन्य देशवासी भाइयों के रास्ते पर चलते और बड़े-बड़े डिपार्टमैंटल स्टोर और

सहकारी उद्योग खोलते। वे सरकार बनाने के लिए अपने ही वर्ग के लोगों को चुनते और सहकारी उद्योग की बेहतरी वाले कानूनों को पारित कराते और कुछ ही वर्षों में वे औद्योगिक क्षेत्र के मालिक हो कर चैन की बंसी बजाते।

काम करने वाला वर्ग जब कभी भी एक 'विशेष अरचरण' के अनुसार जीने लगता है तो वह मालिक वाला वर्ग बन जाता है। धन-दौलत का कानून उनके लिए भी वही रहता है जो औरों के लिए होता है।

यह बात उनको सीखनी चाहिए कि जब तक वे वह करना जारी रखेंगे जो कि वे कर रहे हैं तब तक वे वहीं रहेंगे जहां कि वे हैं।

लेकिन, व्यक्तिगत रूप से किसी कामगार को उसके वर्ग की अज्ञानता, अनभिज्ञता या मानसिक काहिली के कारण दबा कर नहीं रखा जा सकता। वह धन-दौलत की ओर जाने वाली लहरों पर सवार हो सकता है और यह पुस्तक उसे बताने वाली है कि कैसे।

धन-दौलत के अभाव के कारण कोई भी ग़रीबी में पड़ा नहीं रहा है क्योंकि धन तो पर्याप्त से भी अधिक मात्रा में मौजूद है, सभी के लिए।

भवन निर्माण की जितनी सामग्री अकेले संयुक्त राज्य अमेरिका में उपलब्ध है उसी से इस धरती पर रहने वाले हर परिवार के लिए वाशिंटन में बने संसद भवन जितना बड़ा मकान बनाया जा सकता है। और, यहां सघन रूप से खेती करके यह देश इतना ऊन, कपास, लिनन और रेशम पैदा कर सकता है कि पूरी दुनिया में हर किसी के कपड़ों के लिए पर्याप्त होगा - और वह भी इतना नफ़ीस और महीन जितना कि सोलोमन के पास भी नहीं रहा होगा, और साथ ही इतना अनाज पैदा कर सकता है कि दुनिया का प्रत्येक व्यक्ति भर पेट खा सके।

ऐसी आपूर्ति जो कि आंखों से देखी जा सकती है वह अनंत है, असीम है, कभी न ख़त्म होने वाली है, और वह आपूर्ति जो कि आंखों से नहीं देखी जा सकती वह भी वास्तव में अनंत है, असीम है, कभी न ख़त्म होने वाली है।

इस धरती पर जो कुछ भी आप देखते हैं वह सब एक ही मूल तत्व से बना है, उस मूल तत्व से जिससे कि यह सब कुछ एक प्रक्रिया के अंतर्गत चलता रहता है।

नए रूप-आकार निरंतर निर्मित किए जाते रहते हैं और पुराने समाप्त किए जाते रहते हैं, लेकिन सभी रूपाकार एक ही तत्व द्वारा रचे जाते हैं।

निराकार व अदृश्य सामग्री, या मौलिक तत्व का भंडार तो अनंत है। यह सारा ब्रह्मांड इसी तत्व का बना हुआ है लेकिन इस ब्रह्मांड के बनाने के बाद भी यह तत्व चुक नहीं गया है।

इस दृश्यमान ब्रह्मांड के समस्त रूपों के अंदर और रूपों के बीच में जो आकाश रहता है वह उसी मूल तत्व से, उसी निराकार व अदृश्य सामग्री से भरा हुआ है जिससे कि सब कुछ बनता है। जितना कुछ बन चुका है उससे अगर दस हज़ार गुना और भी बनाया जाए तो भी ब्रह्मांडीय सामग्री समाप्त नहीं होगी।

अतः, कोई भी इसलिए ग़रीब नहीं है क्योंकि प्रकृति ग़रीब है या इसलिए कि प्रकृति के पास उसे देने के लिए पर्याप्त नहीं है।

प्रकृति तो समृद्धि का अक्षय पात्र है, ऐसा पात्र जो कभी रीता नहीं होता। मूल तत्व सृजनात्मक ऊर्जा के साथ सदैव सक्रिय रहता है और रूपाकारों की रचना निरंतर करता रहता है।

भवन निर्माण सामग्री जब समाप्त हो जायेगी तब और पैदा कर दी जायेगी। जिस मिट्टी से खाद्यान्न और वस्त्र बनाने के लिए सामग्री प्राप्त की जाती है, अगर वह मिट्टी चुक गई तो नई मिट्टी पैदा कर दी जायेगी।

अगर धरती में से सारा सोना-चांदी निकाल लिया गया, और अगर इंसान फिर भी सामाजिक विकास की ऐसी अवस्था में हुआ कि उसे सोने-चांदी की आवश्यकता पड़ी, तो उसी निराकार प्रकृति में से और अधिक सोना-चांदी पैदा हो जायेगा।

यह निराकार व अदृश्य प्रकृति इंसान की आवश्यकता के अनुसार कार्य करती है। यह उसे किसी भी अच्छी चीज़ का अभाव नहीं होने देगी।

यह बात मानव-समूह के लिए बिल्कुल सच है। कुल मिला कर मानव जाति हमेशा ही प्रचुर रूप से समृद्ध रही है। लेकिन अगर लोग व्यक्तिगत रूप से ग़रीब हैं तो ऐसा इसलिए हैं क्योंकि उन्होंने कामकाज के लिए उस 'विशिष्ट आचरण' के अनुसार कार्य जीना आरंभ नहीं किया है जो कि मानव को वैयक्तिक रूप से धनवान बनाता है।

यह निराकार या अदृश्य प्रकृति बहुत प्रज्ञावान है, यह ऐसी चीज़ है जो सोचती है। यह जीवंत है, और जीवन के प्रति यह हमेशा उत्साहित रहती है।

यह जीवन की वह स्वाभाविक, नैसर्गिक, और अंतर्निहित प्रवृत्ति है जो अधिकाधिक जीना चाहती है; यह प्रज्ञा की वह प्रवृत्ति है जो कि वह स्वयं की अभिवृद्धि करना चाहती है; और यह चेतना की वह प्रवृत्ति है जो अपनी सीमाओं का विस्तार करना चाहती है और स्वयं को अधिकाधिक अभिव्यक्त करना चाहती है।

यह गोचर ब्रह्मांड, यह दृश्यमान सृष्टि, उस प्रकृति द्वारा रची गई है जो कि स्वयं अगोचर है, अदृश्य है। स्वयं को अधिकाधिक अभिव्यक्त करने के लिए उसी ने स्वयं को रूप-आकार प्रदान किया है।

यह ब्रह्मांड एक विराट जीवंत प्रेज़ैंस है, और यह स्वाभाविक रूप से अधिक जीवन की ओर, अधिकाधिक अभिव्यक्ति की ओर गतिमान रहता है।

प्रकृति को जीवन की अभिवृद्धि करने के लिए रचा गया है। जीवन की अभिवृद्धि करना इसका प्रेरक प्रयोजन है।

इस हेतु, जीवन की सहायता करने के लिए जो कुछ भी संभव हो वह विपुल और प्रचुर मात्रा में उपलब्ध कराया जाता है। इसमें कोई अभाव तब तक नहीं हो सकता जब तक कि ईश्वर स्वयं का ही खंडनकर्ता न हो जाए और अपनी ही सृष्टि को मिटाना शुरू न कर दे।

धन की आपूर्ति में अभाव हो जाने के कारण आप ग़रीब नहीं बनाए रखे जा सकते। यह एक ऐसा तथ्य है जिसे मैं थोड़ा आगे चल कर सिद्ध करने वाला हूं कि यह अगोचर या अदृश्य आपूर्ति भी उस व्यक्ति के आदेश पर चला करती है, उसके अधीन रहा करती है जो 'विशिष्ट आचरण' के अनुसार सोचता व कार्य करता है।